

वानपि । बिभ्रत्यनन्यविषयां लोकपाल इति श्रुतिम् Kāvśid. 2, 331. बहु-
विरिपदाञ्चलच्छ्राः — सटापाटलविधमम् Rāga-Tar. 5, 332. नाप्युर्जा बिभ-
रामास वैदेहो प्रसितो भृशम् so v. a. Gewalt anwenden BHATT. 6, 3. —
2) ertragen, zu erfahren haben: यमोर्ममस्य बिभ्यादज्ञामि RV. 10, 10, 10.
मम दीर्घं विरुद्रतं बिभर्ति (सा) Çāk. 180. दुःखं बिभ्रति साधवः Spr. 928.
बिभ्रत्कोपम् dem Zorn unterworfen MBh. 3, 1638. संत्रासमबिभः शक्रः so
v. a. erschrak BHATT. 17, 108. कृत्रिमां बिभ्रतो नतिम् (चापस्य खलस्य च)
Spr. 3348. बिभ्रो यत्प्रणम्याज्ञाम् gehorchen Rāga-Tar. 4, 225. — 3) im
Laufe mit sich führen; Etwas fahren, irgendwohin bringen: भरञ्चक्रमे-
तशः RV. 5, 31, 11. 1, 124, 13. देवं वक्तुं बिभ्रतः 6, 53, 6. 8, 54, 4. अश्वसो
ये वामपुं दासुषो गृह्णं युवां दीर्घं बिभ्रतः 7, 74, 4. धुरः 10, 94, 6. वसु बि-
भ्रता रथे 1, 47, 3. ऊर्मिं न बिभ्रदर्पसि 9, 44, 1. वधूमिव वा शाले यत्र कामं
भरामसि AV. 9, 3, 24. med. ferri, sich schnell hinbewegen: पयो किञ्चाना
उद्भिर्भरति RV. 1, 104, 4. — 4) entführen, wegnehmen: यो अघ्न्याया भर-
ति क्षीरम् RV. 10, 87, 16. यो वृत्राय सिन्धुमत्राभरिष्यत् 2, 30, 2. सर्व भरती
डुर्गतिं पेरिहि AV. 10, 1, 25. med. mit sich nehmen; für sich davontra-
gen, gewinnen: एको घना भरते अत्रतोतः RV. 5, 32, 9. 2, 24, 9. 13. 26, 3.
अर्वद्विर्वाजं भरते घना नृभिः 1, 64, 13. 9, 79, 2. 10, 64, 6. ब्रह्मद्विषो विष्-
गेनो भरत 36, 9. AV. 7, 97, 4. 8, 3, 16. यज्ञार्थभृतसंपद् erworben, gewon-
nen KATHAS. 21, 109. — 5) herbeibringen, darbringen; herbeischaffen:
बलिम् RV. 5, 1, 10. 7, 18, 19. यस्तं इधमं जभरत् 4, 2, 6. अन्नम् 7. रत्नम् 13.
यत्सुपणो कृष्यं भरन्मनवे देवज्ञुष्टम् 4, 26, 4. 6. 7. भरा सुतस्य पीतये 8, 32,
24. विश्वाका ते सद्मिर्भरामाश्रयेव तिष्ठते AV. 3, 13, 8; vgl. VS. 11, 75.
योद्धारो ऽबिभ्रः शाप्ये साततं वारि मूर्धभिः BHATT. 17, 53. med. RV. 7,
2, 4. 10, 36, 8. बिभ्रश्च रत्नं HARIV. 8418. अघ्न्युभिर्भरामाणां (pass.) अघ्नसत प्र-
क्राः RV. 1, 133, 3. 9, 110, 5. पक्राः पत्तो भरत वाम् obviam se ferunt 5,
73, 8. verschaffen, verleihen: यौवने सदलंकाराः शोभा बिभ्रति सुधुवः
Spr. 3119. — 6) halten so v. a. erhalten, unterhalten, hegen, pflegen:
बक्ष्स्पतिं यः सुमते बिभर्ति RV. 4, 30, 7. 6, 66, 3. AV. 9, 2, 15. 11, 3, 24.
18, 4, 25. ÇAT. Br. 4, 6, 2, 21. बिभ्रहि मा 1, 8, 1, 2. 3. 2, 3, 2. 2. 4, 7. अनार्त-
मिमं बिभराणि 6, 6, 4, 8. प्रज्ञाः 14, 2, 4, 21. 1, 4, 2, 2. das Feuer 9, 5, 1, 62.
ब्रह्मणाः सूनो सक्तो व्यथितः RV. 3, 1, 8. बिभर्तिदि चराचरम् M. 3, 75.
BHAG. 15, 17. MBh. 1, 8415. RAGH. 10, 16. तत्रियं चैव वैश्यं च ब्राह्मणा
वृत्तिकर्षिता । बिभ्यात् M. 8, 411. 6, 89. 9, 95. धनं यो बिभ्यादातुर्मतस्य
स्त्रियमेव च 146. 311. MBh. 2, 188. 4, 543. DAC. 2, 37. R. 2, 31, 22 (16
GORR.). KATHAS. 49, 240. BHAG. P. 9, 11, 9. 20, 39. बिभर्ति सर्वभूतानि वे-
दशास्त्रं सनातनम् M. 12, 99. दरिद्रान्भर Spr. 1112. 4649. MBh. 1, 3105. R.
2, 31, 15. भरते विश्वमोशः ÇVETĀÇV. Up. 1, 8. भरस्व डुप्यत्तं पुत्रम् MBh. 1,
3104. 3042. यथा स्वपुत्रं जननी क्षीरेण भरते सदा 13, 3128. PAÑČAT. III,
168. BHAG. P. 9, 20, 21. बभार HARIV. 730. RAGH. 14, 82. BHAG. P. 6, 1, 66.
भरिष्यामि MBh. 1, 1870. R. 2, 31, 11 (9 GORR.). DAC. 2, 34. तत्सूनुभृत
तितिम् so v. a. regierte Rāga-Tar. 1, 64. Vgl. परभृत. — 7) Jmd mietthen,
dingen, besolden: भरस्व माम् (vgl. भजस्व माम् MBh. 4, 237) MBh. 3, 2637.
भृत gemiethet, besoldet, bezahlt M. 8, 215. भृताच्चाध्ययनादानम् 11, 62. JAGN.
3, 235. MBh. 5, 5721. 13, 241. fg. Kām. Nīris. 13, 75. 18, 17. भक्तवेतनयो-
भृतः Kost und Lohn empfangend MBh. 2, 183. सुभृतैव देवज्ञेन VARĀH.
BRH. S. S. 7, Z. 11. राज्ञो von Fürsten besoldet MBh. 13, 4276. R. GORR.
1, 53, 8. न कुप्यवेतनी कश्चिन्न चातिक्रातवेतनी । नानुयक्तभृतः aus Gnade

und Barmherzigkeit besoldet MBh. 3, 657. गोपः क्षीरभृतः mit Milch be-
zahlt M. 8, 231. — 8) (die Stimme) erheben, erschallen lassen; act. und
med.: आहूषम् RV. 1, 61, 2. श्लोकं घोषं भरथेन्द्राय 10, 94, 1. कारम् 9, 14.
1. उपस्तुतिं भरमाणस्य कारोः 1, 148, 2. med. sich erheben, ertönen:
विसृष्टेना भरते सुवृत्तिरियमिन्द्रं शोकवती मनीषा 7, 24, 2. — 9) anfül-
len, erfüllen; beladen: जठरं को न बिभर्ति केवलम् füllen und ernähren
Spr. 3286. Spr. एकः स एव im 2ten Nachtr. (zu füllen —, zu ernähren
haben oder schlechtweg haben, besitzen). वैद्वर्षवापीम् — भृता सुधारसेन
KATHAS. 43, 130. अमर्षाद्विनिना लोकान् BHATT. 13, 24. भृतं च शतमुष्ट्राणां
रत्नभरणभारकैः KATHAS. 44, 76. 132. — Vgl. धर und das aus भर her-
vorgegangene कर (भारं करति neben भरति und बिभर्ति).

— caus. verdingen: मात्मानमवमन्यस्व मेनमल्पेन वीभरः achte dich
nicht gering und verdinge dich nicht für ein Geringes MBh. 3, 4300. =
पालय Schol.

— desid. बुभूर्षति halten —, unterhalten wollen: भार्यान् ÇAT. Br. 10.
3, 5, 9. 14, 4, 20. विसृज्य ज्ञाप्यसे ऽप्यस्मान्कनीयंसा बुभूर्षति (माता).
MĀRK. P. 106, 22. — Vgl. बुभूर्षु.

— intens. 1) da und dorthin tragen, hinundherbewegen: श्रुतिं धूम-
मंरुषं भरिष्यत् (P. 7, 4, 65) RV. 10, 45, 7. ता अस्य वर्षां प्रचये भरिषति
124, 7. — 2) beständig erhalten: यो ऽखिलं जगत् । चरीकर्ति बरीभर्ति
संजरीकर्ति लीलया Verz. d. Oxf. H. 160, b, 5.

— अति 1) med. sich erheben —, hinführen über: तं ग्यां च पृथिवीं
चातिं जघिषे RV. 9, 86, 29. 100, 9. — 2) अतिभृत gefüllt KĪRĀT. 3, 20.

— अनु 1) tragen, stützen: स्वेनैवैनं योनितानुबिभर्ति KĪTH. 19, 10.
— 2) einbringen (in den Leib u. s. w.): पुनस्तदा वृक्षति यत्कानायां
डुक्तिरा अनुभृतमन्वा RV. 10, 61, 5. बृहद्वेयो ऽनु भूमौ जभार AV. 11,
3, 12. In VS. 2, 17 gehört अनु zu जोषम्. — Vgl. अनुभर्तृ.

— अघ्न wegtragen, wegnehmen: शक्रदेहो अघ्नभरत् RV. 1, 161, 10. 4.
27, 2. भरतामप यद्रपः 10, 39, 8. नैषा गव्यतिरिफर्त्वा उ 14, 2. अघ्नं पा-
प्मानं भरणीभरत्सु TAITT. Br. 3, 1, 2, 11. — Vgl. अघ्नभर्तृ.

— अभि zuschieben: यो न अगो अघ्नयेना भरति RV. 5, 3, 17.

— अघ्न 1) hineinstecken, — stossen, — drängen: इन्द्रो अघ्नया अघ्नं वध-
र्जभार RV. 1, 32, 9. 10, 113, 5. उज्जानायामव भरा चिकित्वा 3, 29, 3. वद-
न्यावाव वेदिं धियाते 5, 31, 12. अत्राकृ तडुहगायस्य विज्ञोः परं पदमव
भारि (भाति RV.) भूरि dort wurde eingedrückt Vishṇu's Fussstapfe
VS. 6, 3. med. hinunterfahren: अघ्नं त्मना भरते केनमुदन् RV. 1, 104, 3.
यदी घृतेभिराकृता वाशीमभिर्भरत उच्चव च sinken lassen 8, 19, 23. —
2) wegnehmen, abtrennen: अघ्नं प्रियमर्षिज्ञानस्य शिरो भरत् RV. 2, 20, 6.
शिरो ऽव लचो भरः 10, 171, 2. — अघ्नभृत MBh. 3, 4060 fehlerhaft für
अघ्नभृथ, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. अघ्नभृथ, अघ्नवध.

— आ 1) herbeibringen, herbeischaffen: आ नो अघ्नो रयिं भर RV. 1, 79.
8. 93, 6. तुभ्यं सुतो मधवत्तुभ्यामभृतः 2, 36, 5. 4, 7, 4. 7, 32, 7. इषमूर्त्तं सुति-
तिं विश्वमाभाः 10, 20, 10. यमादकं मन आभरम् 60, 10. 72, 7. दत्तं ते भद्र-
मामर्षम् 137, 4. VS. 13, 49. 28, 17. अघ्नष्टपुनराधियात् ÇAT. Br. 1, 3, 1, 20.
ĀÇV. GRUH. 1, 1, 4. AV. 4, 13, 5. 5, 31, 10. 6, 32, 3. med.: अघ्नो पर्यस्वती-
नामा भरि ऽकं संकल्पः 3, 24, 1. KAUSH. Up. 1, 2. अभृतपरिचर्योपकरण
adj. BHAG. P. 5, 2, 2. कदपत्याभृतं दुःखम् so v. a. verursacht 4, 13, 13.
ताभ्यां (नाडीभ्यां) लोहितमाभृतम् so v. a. entstand 3, 26, 59. — 2) füllen.